Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 2, March–2021, (Special Issue), ISSN 2230-7540

स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा, धर्म एवं नारी शिक्षा के संदर्भ में विचार

Dr. Savita Gupta*

Associate Professor, School of Education, Lords University, Alwar, Rajasthan

सारांश:- *शिक्षा व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों को विकसित करने की प्रक्रिया है। अतः शिक्षा एक गतिशील प्रवाह और अनिवार्य अंग है शिक्षा व्यक्ति के तमाम विषमताओं पर विजय हासिल करना है। शिक्षा के ही द्वारा समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है इस प्रकार जीवन की उदारता उच्चता एवं उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा ही संभव है। स्वामी विवेकानन्द जी भारतीय और विश्व इतिहास के इतिहास के उन महान विभूतियों में से है जिन्होनें राष्ट्रीय जीवन को एक नई दिशा प्रदान की।*

भारत से हजारों मील दूर विदेश में एक उभरते हुए दीपक की भांति अपरिचितों के बीच अपनी ओजमयी वाणी में भारतीय धर्म-साधना के चिरन्तन सत्यों का उद्घोष किया। सम्पूर्ण विश्व में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने स्वामी विवेकानन्द का नाम नहीं सुना होगा। आधुनिक भारत में इनका उल्लेख युवा पुरुष के रुप में किया जाता है। इनका लक्ष्य समाज सेवा, जनशिक्षा धार्मिक पुनरुत्थान और समाज में जागरुकता लाना, मानव की सेवा आदि था। जनचिंतन से सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए स्वामी जी का चिन्तन अत्यन्त मौलिक एवं प्रेरक है। स्वामी विवेकानन्द के जाति के सम्बन्ध में विचारों, नारी उत्थान के प्रति चिन्तन, जन शिक्षण का प्रसार, वास्तविक समाजवाद की अवधारणा, सामाजिक एकता, जनजागरण की आवश्यकता तथा कर्मशीलता सम्बन्धी विचारों नें जन-मन को प्रभावित किया है और इनमें आज भी जनसाधारण को अभिप्रेरित करनें का अनुपम सामर्थ्य है। भारत के लिए स्वामी जी के विचार चिंतन और संदेश प्रत्येक भारतीय के लिए अमूल्य धरोहर है तथा उनके जीवन शैली और आदर्श प्रत्येक युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। स्वामी जी भारतीय शिक्षा और धर्म के समग्रंता के सम्बन्ध ने आज हमारे सामने विशेषकर युवा पीढ़ी के लिए यह आहवान है कि - "मानव स्वभाव गौरव को कभी मत भूलो।" उनके विचारानुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नही है अपितु उसका लक्ष्य जीवन चरित्र और मानव का निर्माण करना होता है। चूंकि वर्तमान शिक्षा उन तत्वों से युक्त नहीं है। वे शिक्षा के वर्तमान रुप को अभावात्मक बताते थे, जिसमें विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति का ज्ञान नहीं होता।

मुख्य शब्द – स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा पर विचार धर्म, एवं नारी के संदर्भ में विचार

----------X----------

प्रस्तावना

शिक्षा दर्शन के विवेचन के क्रम में सर्वप्रथम हम उनकी शिक्षा दर्शन सम्बन्धी आवधारणा को स्पष्ट करेंगे तथा इसमें मानवतावादी तत्व को अन्वेषित करने का प्रयास करेंगे। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय हैं कि यद्यपि राधाकृष्णन् पर पाश्चात्य दृष्टिकोण का पर्याप्त प्रभाव पडा हैं, फिर भी इनकी शिक्षा दर्शन सम्बन्धी अवधारणा के सृजन का आधार भारतीय मान्यताएँ हैं। भारत में शिक्षा दर्शन को केवल एक सैद्धान्तिक खोज के रूप में स्वीकार नहीं किया गया हैं, वरन् उसकी व्यवहारिक सार्थकता का भी निरूपण हुआ हैं और इस क्रम में इसे धार्मिक एवं आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति का एक साधन माना गया हैं। यहाँ शिक्षा दर्शन का लक्ष्य हैं मानव को दुःखों के बन्धन से मुक्त करना। इस लक्ष्य की प्राप्ति का उपकरण यथार्थ ज्ञान हैं, और ज्ञान वही यथार्थ कहा गया हैं जिसके द्वारा सत्-असत् का भेद स्पष्ट हो। इसका अर्थ यह हैं कि भारतीय परम्परा में दर्शन एक सत्-दृष्टि प्रदान करता हैं। इस दृष्टि का सम्बन्ध जीवन से हैं, अतः यहाँ शिक्षा दर्शन कोई अमूर्त्त कल्पना मात्र नहीं वरन् जीवन का प्रदर्षक हैं। भारतीय दर्शन की मूल चेतना की अभिव्यक्ति करते हुए राधाकृष्णन् ने स्पष्ट शब्दों में कहा हैं कि "भारतीय चिन्तन में अस्तित्ववादी संकट और बौद्धिक

www.ignited.in

विमर्ष दोनों हैं। भारतीय चिन्तन का मुख्य सम्बन्ध मानव की मर्यादा (स्टेटस), उसके अन्तिम लक्ष्य से हैं। प्रकृति और परमात्मा पर तो उनके मनुष्य के सहायक के रूप में मनुष्य को आत्मा की सुरक्षा तथा मन की शान्ति में सहायता प्रदान करने के लिए विचार किया गया हैं। भारतीय चिंतन की प्रधान रूचि तो व्यवहारिक हैं। दर्शन जीवन का पथ-प्रदर्शक हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम् की संकल्पना ने पूरे विश्व को एक श्रंखला में निबद्व करनें का प्रयास किया है। सभी धर्मो को महत्व दिया तथा उनके सारभूत तत्वों को जो मानव जीवन को उनका चरित्र तथा ज्योति प्रदान करनें में सक्षम हो, को अपनाने का आह्वान करते थे। स्वामी जी के व्यक्तित्व और विचारों में भारतीय संस्कृति परम्परा के सर्वश्रेष्ठ तत्व निहित थे। उनका जीवन भारत के लिए वरदान थे। वे आधुनिक भारत के एक आदर्श प्रतिनिधि होने के अतिरिक्त वैदिक धर्म एवं संस्कृति के समस्त स्वरुपों के उज्जवल प्रतीक थे। उनके विचारों से हमें प्रेरणा, नव चेतना तथा स्फूर्ति प्राप्त होती है। हमारे अन्तःकरण में आलोकित प्रस्फुटिल ज्वाला प्रज्जवलित होती है। "उनके विचार शिक्षा और दर्शन इतने प्रभावी है कि स्वामी जी के द्वारा दिए गए सैकड़ो वक्तव्यों में से कोई एक वक्तव्य महान क्रान्ति करने के लिए, व्यक्ति के जीवन में आमूल परिवर्तन करने में समर्थ है। स्वामी जी के दर्शन और विचारधारा को स्वीकार करके राष्ट्र और समाज के प्रत्येक व्यक्तियों में सांस्कृतिक एकता और जागृति लाने की है। संस्कृति लोगों की जीवन रीति है एक संस्कृति व्यवहार की वह व्यवस्था है, जिसमें किसी समाज के सदस्य सहभागी होते हैं और समाज वह जनसमूह है जो एक सर्वनिष्ट है जिसमें मानव के जीवन मूल्य और ज्ञान का असीम भण्डार है। जीवन मूल रहस्य को यदि जानना है तो वैदिक संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है। मानव जीवन के इतिहास को जानने का सबसे प्राचीन साहित्य वेद है। विश्व के इतिहास में अति प्राचीन और प्रमाणित साहित्य है।

शिक्षा के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का दर्शन

परिवार एक बड़ा प्रशिक्षण संस्था स्वरूप हैं। जो आज यांत्रिक सभ्यता, आद्योगीकरण, बढ़ते वैयक्तिवाद के आघातों से छिन्न-भिन्न होने लगे हैं। चरित्र के द्वारा राष्ट्र के भाग्य का निर्माण होता हैं। जिस देश के निवासियों का चरित्र नीचा है, वह देश कभी भी महान नहीं हो सकता। यदि हम एक महान राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें अधिक संख्या में युवकों और युवतियों को इस प्रकार शिक्षित करना होगा कि उनमें चरित्र बल हो। हमारे पास ऐसे नर-नारी होने चाहिए जो दूसरों में अपनी झाँकी देखें, जैसा कि हमारे शास्त्रों में कहा गया है" शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में स्वामी जी की तुलना विश्व के महानतम शिक्षा शास्त्रियों प्लेटो, रुसो और बर्ट्रेड रसेल से की जाती है क्योंकि शिक्षा के प्रमुख सिद्वान्त प्रस्तुत किये गये थे।

स्वामी विवेकानन्द जी के नस-नस में भारतीयता एवं आध्यात्मिकता कूट-कूट कर भरी हुई थी। अतः उनके शिक्षा दर्शन का आधार भी भारतीय वेदान्त तथा उपनिषद ही रहे। दार्शनिक होने के कारण इनकी गणना महान शिक्षाशास्त्रियों में की जाती है। इनके अनुसार पाठशालाओं में दी जाने वाली मनुष्य बनाने वाली शिक्षा नही है, वह कुछ भी नही सिखाती, केवल जानकारियों का ढ़ेर होती है। जो आत्मसात हुए बिना मस्तिष्क में पड़ा रहता है, जो शिक्षा निरर्थक है। उनके अनुसार ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए, जिसमें चरित्र का गठन हो, मानसिक शक्ति का विकास हो, बुद्धि का विकास हो तथा भावों एवं विचारों को आत्मसात कराये। स्वामी जी वेदांती थे इसलिए वे जन्म से ही मनुष्य को ही पूर्ण मानते थे। और इस पूर्णता की अभिव्यक्ति को ही शिक्षा कहते थे। स्वामी जी के शब्दों में "मनुष्य की अर्न्तनिहित पूर्णता को व्यक्त करना ही शिक्षा है।" सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो। 21वीं शताब्दी के बदलते परिवेश में जहाँ सूचना और प्रौद्योगिकी का युग चल रहा है। वहाँ भारत की वर्तमान शिक्षा पद्वति महज उपलब्धियाँ वितरण करने के अतिरिक्त और कोई विशेष उपलब्धि प्राप्त नहीं की गई है।

धर्म के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का दर्शन:-

स्वामी विवेकानन्द धर्म को सार्वभौम धर्म कहते है। धर्म को वे मानव जाति को एकता के सूत्र में बांधने वाली शक्ति के रुप में मानते थे। वे धर्म के सम्बन्ध में किसी एक धर्म को प्राथमिकता नहीं देते थे। धर्म मनुष्य के चिन्तन और जीवन का सबसे उच्च स्तर है। किसी धर्म का उद्देश्य जितना ही उच्च होता है, उसका संगठन जितना ही सूक्ष्म होता है उसकी क्रियाषीलता भी उतनी ही अद्भुत होती है। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार भारतवासियों को ऐसे धर्म की आवष्यकता नही है, जो कमजोरी पैदा करे, उन्होंने धर्म को मानव शक्ति का स्त्रोत माना है। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि प्रत्येक धर्म के मूल तत्च समान है। हिन्दू वैदिक धर्म विवेकानन्द के अनुसार नैतिक मानववाद तथा आध्यात्मिक आदर्श वाद के सार्वभौमिक तत्वों का संदेश देता है।

स्वामी विवेकानन्द का धर्म सर्वधर्म है वे किसी एक धर्म के पक्षधर नही थे बल्कि प्रत्येक धर्म के मूल, सारत्व मानव कल्याणकारी अनिवार्य उपयोगिता जो मानव को सच्चे धार्मिकता प्रदान करते हो, के मानने वाले थे। स्वामी

विवेकानन्द सार्वभौम धर्म के द्वारा राष्ट्रीय एकता को सशक्त करना चाहते थे।

नारी-शिक्षा के संबंध में विचार:-

किसी व्यक्ति का शिक्षा दर्शन उसके जीवन दर्शन से बहुत गहराई से सम्बन्ध रखता हैं। पूर्व पृष्ठों में स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया। जहाँ तक वर्तमान सन्दर्भो में स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक विचारों में स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता, उपयोगिता का प्रश्न है। उस पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। क्योंकि डॉ0 राधाकृष्णन जी के स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचार वर्तमान स्त्री शिक्षा के प्रतिबिम्ब है। स्वामी विवेकानन्द जी की स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विचार सामाजिक क्रान्ति और सामाजिक परिवर्तन का साधन थी। उन्होंने इस चिन्तन को केवल सैद्धान्तिक रूप में ही नहीं रखा बल्कि अपने जीवन काल में इसका प्रयोग भी किया। वास्तव में स्वामी विवेकानन्द जी जानते थे कि बिना मानसिक परिवर्तन के कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं हो सकता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी कहा गया है कि शिक्षा सामाजिक न्याय और सामाजिक समानता के लक्ष्य तक पहुँचने का साधन हैं। वर्तमान शिक्षा जगत में स्त्रियों की शिक्षा में कोई परिवर्तन या सुधार लाना है तो स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक विचारों पर चलकर और उसकों अपनाकर लाया जा सकता हैं।

स्त्रियों की शिक्षा के विषय में स्वामी विवेकानन्द के विचार भारतीय दर्शन के उस प्राचीन आदर्श से प्रेरित हैं जिसमें माना गया है कि जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। लेकिन इसका तात्पर्य केवल इतना ही है कि जो कार्य पुरूषों द्वारा किया जा सकता है उसे वे भली प्रकार करें जो कार्य स्त्रियां कर सकती हैं उसे वह अच्छी तरह करें। जहाँ तक दोनों की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति या व्यक्तित्व के विकास का सम्बन्ध कहीं भी लिंग से नहीं है। उनका कहना है कि "स्त्रियां मानव है और उस रूप में उन्हें अपने पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर के पक्षधर हैं। उनकी अर्न्तनिहित क्षमताओं के विकास को उतना ही महत्वपूर्ण मानते हैं। जितना पुरूषों की। इस प्रकार स्त्रियों की शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण मानवीय हैं।

स्त्रियों की शिक्षा के विषय में उनका यह दृष्टिकोण विकसित करने में गाँधी जी के विचारों और प्रयोगों से बड़ी सहायता मिली। उन्होंने यह भी देखा कि गाँधी जी प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों को आगे लाये और उन्हें अवसर देने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

स्त्रियों की शिक्षा के सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द के विचार शरतीय दर्शन के उस प्राचीन आदर्श से प्रेरित है। उनका मानना था कि स्त्री और पुरूष दोनों की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति या व्यक्तित्व के विकास का प्रश्न है, लिंग का प्रश्न नहीं उठना चाहिए। वर्तमान आधुनिक परिवेश में महिलाएं अपना नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतन्त्र है। महिलाओं को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्रदान की जा रही है। उन्हें पुरूषों के समान ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

स्वामी विवेकानन्द् जी का मानना था कि स्त्रियां मानव है और उस रूप में उन्हें अपने पूर्ण विकास का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरूषों को। आज महिलाएं भी पुरूषांे के बराबर हर क्षेत्र में कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही हैं। अभी तक जो क्षेत्र स्त्रियों के लिए वर्ज्य माने जाते थे उन शाखाओं में भी स्त्रियों का पदार्पण हो चुका है।

कुछ-कुछ क्षेत्र ऐसे रहें है जहॉ स्त्रियों ने पुरूषों से अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जैसे शन्ति स्थापना में या बच्चों के लालन-पालन में। वर्तमान आधुनिक परिवेश में महिलाएं शिशुओं के पालन पोषण व शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। बहुत से नर्सरी और प्री-विद्यालय में महिला शिक्षिकाएं शिक्षण कार्य कर रही हैं। क्योंकि महिलाएं बालकों के मनोविज्ञान को अच्छी प्रकार समझने में सक्षम होती है।

स्वामी विवेकानन्द जी का मानना था कि स्त्रियों की शिक्षा के लिए केवल कानूनी प्रावधान ही पर्याप्त नहीं हैं, उनके लिए सामाजिक वातावरण बनाने की आवश्यकता है। महिला मण्डल जैसे संगठन आगे जाकर इस दिशा में कार्य करें। वर्तमान में इस प्रकार की अनेक संस्थाएं सरकार द्वारा संचालित की जा रही है प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, ऑगनबाड़ी कार्यक्रम। इन कार्यक्रमों के माध्यम से बड़ी संख्या में स्त्रियों को शिक्षित किया जा रहा है।

ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों में स्त्रियों की शिक्षा के विषय में जो कार्य किए गये उस पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की है, लेकिन वे सन्तुष्ट नही दिखते। ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों में स्त्रियों की शिक्षा की स्थिति अब भी दयनीय है, नही के बराबर है इसके लिए उनका सुझाव है कि विशेष कार्यक्रम बनाकर इस कमी को दूर किया जाना चाहिए। इन्हीं सब मुद्दों को ध्यान में रखकर शरत सरकार के मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा विश्व बैंक पोषित परियोजना सर्वशिक्षा अभियान द्वारा स्त्रियों की शिक्षा के लिए प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में मुफ्त गणवेश,

पुस्तकें, तथा मध्यान्ह शेजन की समुचित व्यवस्था की जा रही है तथा उन्हें निःशुल्क शिक्षा की जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए नगरों को जाने वाली छात्राओं के लिए रेल संसाधनों में रेल मन्त्रालय द्वारा मुफ्त मासिक सीजन टिकट की सुविधा स्नातक तक ही छात्राओं को उपलब्ध करायी जा रही है। वर्तमान समय में भी स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा दर्शन की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

संस्कृति की अमूल्य निधियों तथा उच्चतर मानवीय मूल्यों की रक्षा का जहाँ तक प्रश्न है, वे स्त्रियों को पुरूषों से अधिक महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उदाहरण स्वरूप उनमें त्याग और आत्म बलिदान की भावना पुरूषों से अधिक बलवती होती हैं।

किन्हीं-किन्हीं क्षेत्रों में वे पुरूषों से अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। जैसे शान्ति स्थापना में या बच्चों के पालना पोषण में। मगर यह तभी सम्भव है जब स्त्रियों को भी उचित शिक्षा दी जाए।

स्त्रियों को उचित शिक्षा देने के लिए केवल कानूनी प्रावधान ही पर्याप्त नहीं हैं। उसके लिए सामाजिक वातावरण बनाने की भी आवष्यकता है। महिला मण्डल जैसे संगठनों को भी आगे जाकर इस दिशा में कार्य करना चाहिए। यह बात भी उन्होंने कही कि स्त्रियों की शिक्षा की योजना बनाने में हमें विशेष ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि शिक्षा द्वारा उनके उच्च गुणों को आँच न पहुँचे।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द जी के विचार अत्यन्त उच्च कोटि के हैं। जीवन के मूल सत्यों, रहस्यों और तथ्यों को समझने की कुंजी है। वे अद्वैत वेदान्त के प्रबल समर्थक थे। भारतीय संस्कृति एवं उनके मूल मान्यताओं पर दर्शन आधारित जीवन शैली अपनाने तथा अपनी संस्कृति को जीवित रखने हेतु भारतीय संस्कृति के मूल अस्तित्व को बनाए रखने का आह्वान किया। ताकि आने वाली भावी पीढ़ी पूर्ण संस्कारिक, नैतिक गुणों से युक्त, न्यायप्रिय, सत्यधर्मी तथा आध्यात्मिक और भारतीय आदर्श के सच्चे प्रतीक के रुप में विश्व में ऊँचा स्थान रखे। वर्तमान में आज के युवा पीढी के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने मूल संस्कृति से परिचित होवे और नैतिक गुणों से भरपूर होकर सच्चे भारतीय होने के गौरव को बनाए रखे।

शिक्षा एक ऐसा पवित्र प्रकाश जो अज्ञानता के बंधन से मुक्ति दिलाती है और जीवन के दुखों से छुड़ाकर सुखमय ज्योर्तिमय जीवन प्रदान करती है।

संस्कृति देश की धरोहर व पहचान है शिक्षा ज्योति है धर्म मानव होने का प्रतीक है। इसलिए संस्कारिक चरित्रवान उत्तम गुणों से अपने को सजाये। शिक्षा के द्वारा देश के विकास को चरम पर ले जावे। और सर्व धर्म के द्वारा सच्चे मानवता को अपनाकर ईश्वर की सेवा करें।

संदर्भ ग्रंथ: -

1. डॉ. अस्थाना गीता एवं पाण्डा अनिल कुमार (2009) साहित्य रत्नालय कानपुर
2. डॉ. त्रिपाठी नरेश चन्द एवं डॉ. लाल बिहारी विश्वनाथ (2012) 'अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा'
3. जे. डी. पुथियाय (1978) "स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन" थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एण्ड एजूकेशन
4. नगर नाथ कैलाश (2011) "उदयीमान भारतीय समाज और शिक्षा" प्रकाशन जयपुर

Corresponding Author

Dr. Savita Gupta*

Associate Professor, School of Education, Lords University, Alwar, Rajasthan